कविता पाठ के लिए
डॉ. सीमा माथूर सादर आमंत्रित हैं...

डॉ. सीमा माथुर

संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर
दिल्ली विश्वविद्यालय

कृतिः

(1) 'योअर लॉ योअर राइट'-2021

(2) अट्रोसिटिज ऑन दलित वोमैन इन इंडियाः अ स्लैंक्टेड स्टेडी ऑव पैटर्न एंड फॉम्स' 2013

प्रतिष्ठित जर्नल में शोध पत्र प्रकशित।

विशेष :

नेशनल कोसिल फोर वूमैन की सह-संस्थापक एवं आंबेडकरवादी लेखक संघ की कार्यकारिणी सदस्य।

सम्मान

नारी शक्ति एक्सेलेंस अवॉर्ड-2020
सावित्री बाई फूले सम्मान-2022

संपर्कः

7503655071

ई-मेलः

seemaancdhr@gmail.com

आधा-आधा

कहते हो आधा-आधा
मतलब आधी आबादी!
अच्छा! तो हम हैं
आधी आबादी
तो कर दो ना
सब आधा आधा
बांट लो सब आधा-आधा
कर लो घर की जिम्मेदारी में
हिस्सा आधा-आधा
क्या? आधा-आधा?
मैं तो लाता हूं
कमाकर पूरा-पूरा
नहीं! नहीं! घर की जिम्मेदारी में
हिस्सा आधा-आधा
मतलब?
तुम भी बना लो
रसोई आधी
उठा लो बच्चों के
डायपर चेंज की जिम्मेदारी
मां-पापा के नाश्ते
दवाई की जिम्मेदारी
मतलब, घर की
आधी जिम्मेदारी
कहते हो आधा-आधा
मतलब, आधी आबादी
अच्छा! तो हम हैं
आधी आबादी
तो कर लो सब
आधा-आधा
बांट लो सब
आधा-आधा
तो मिल जाए खुशियां
मुझे भी पूरी पूरी!!

आंख की किरकिरी

बन जाती हैं किरकिरी
आंख की वे लड़कियां
जो कर देती हैं
खिलाफत तुम्हारी
आधिकारिक सत्ता की
बगावत चुप्पी की व्यवस्था की
बन जाती हैं किरकिरी
आंख की वे लड़कियां
जो दाग देती हैं
पुरुषवादी सोच पर
सवालिया निशान
पूछ लेती हैं
गलत बात पर तुमसे सवाल
बन जाती हैं किरकिरी
आंख की वे लड़कियां
जो उधेड़ देती हैं
सदियों से सिले
अपने होठों की सीवन
कर देती हैं विरोध
अपने अपमान और
तिरस्कार का
बन जाती हैं किरकिरी
आंख की वे लड़कियां
जो कर देती हैं
चुपचाप तुम्हारी
बात मानने से इंकार
समझदार होतीं
अपने हकों की
बात करती

ये लड़कियां
हां, मुझे पसंद हैं
आंख की किरकिरी
बनती ये लड़कियां।।

बेटियां

गूंजती रहती हैं
अनगिनत आवाजें
कौंधते रहते हैं हजारों
सवाल मन में
क्या आएगी कभी
वह सुबह नई रोशनी
नई उम्मीदों के साथ
जब बेखौफ हो घरों से
निकल सकेंगीं बेटियां
क्या आएगी कभी
वह सुबह नई रोशनी
नई उम्मीदों के साथ
जब नहीं होंगी
हॉनर-किलिंग,
एसिड-अटैक
हत्या-बलात्कार की
शिकार बेटियां
लिंग-परीक्षण
भ्रूण-हत्या और
अगर बच गई तो
बाल-विवाह
घरेलू-हिंसा
दहेज-हत्या की
नहीं चढ़ेंगी
बलि बेटियां
कभी तो आएगी
वह सुबह नई रोशनी
नई उम्मीदों के साथ
जब बिना किसी
जाति और जेंडर
भेदभाव के महसूस
कर पाएंगी स्वयं को
स्त्री से ऊपर
सिर्फ एक इंसान
ऐसे ही अनगिनत
सवालों से रोज
जूझती रहती हूं मैं
क्या आएगी वह सुबह
जब बिना किसी डर के
जी पायेंगी बेटियां।

दोगला समाज

दहल जाता है दिल
कांप जाता है शरीर
जब बनाया जाता है
हमारी बच्चीयों
महिलाओं को
बलात्कार
गैंग रेप
हत्या की शिकार
जला दी जाती हैं
मिटाने को
सारे सबूत
उस पर भी
साधे रहता है चुप्पी
यह निर्मम क्रूर
जातिवादी
दोगला समाज!

पीपनी

कुछ लोग जो रहते हैं
आम लोगों से दूर
बहुत दूर...
अचानक बन बैठते हैं
हिमायती उनके
देख अवसर
कुर्सी और सत्ता के
फुर्ती से बदल जाते हैं वे
जैसे बदलता है रंग गिरगिट
बजाने लगते हैं पीपनी
बदलाव की
करने लगते हैं
बातें विकास की
और चिल्लाते हैं
जोर-जोर से
उठाकर दोनों हाथ
जैसे सही हैं सिर्फ वही
और बाकी सब गलत...
लेकिन आने के बाद सत्ता में
लगने लगता है सब गलत
मतलब! सब कुछ गलत
और लग जाते हैं
बदलने में सब
पूरी ताकत से
और बदल देना
चाहते हैं उसे भी
जो सही था...
क्योंकि उन्हें लगता है कि
वही हैं सही और
बाकी सभी गलत।

खरबूजा

सुना है खरबूजे को देखकर
खरबूजा रंग बदलता है
काश! इंसान को देखकर
इंसान भी रंग बदलते
तो नहीं होती
ऊंची इमारतों और
झोपड़ी के बीच दीवारें
नहीं होते बंद
मंदिर, मस्जिद
गुरुद्वारे के द्वारे
नहीं होता कोई मजबूर
मैला उठाने को